3 सुनो जिया ये सतगुरु की बातैं...

सुनो जिया ये सतगुरु की बातें,
हित कहत दयाल दया तें।।टेक।।

यह तन आन अचेतन है तू,
चेतन मिलत न यातें।
तदपि पिछान एक आतम को,
तजत न हठ शठता तें।।१।। सुनो.।।

चहुँगति फिरत भरत ममता को,
विषय महाविष खातैं।
तदपि न तजत न रजत अभागै,
दृग व्रत बुद्धि सुधातैं।।२।। सुनो.।।

मात तात सुत भ्रात स्वजन तुझ,
साथी स्वारथ नातैं।
तू इन काज साज गृहको सब,
ज्ञानादिक मत घातै।।३।। सुनो.।।

तन धन भोग संजोग सुपन सम,
वार न लगत विलातैं।
ममत न कर भ्रम तज तू भ्राता,
अनुभव-ज्ञान कलातैं।।४।। सुनो.।।

दुर्लभ नर-भव सुथल सुकुल है,
जिन उपदेश लहा तैं।
'दौल' तजो मनसौं ममता ज्यों,
निवड़ो द्वंद दशातैं।।५।। सुनो.।।

अरे मन! तू सत्गुरु का उपदेश सुन। वे दयालु, करुणा करने वाले तेरे हित के लिये ही कहते हैं।। टेक।।

यह देह अचेतन है और तू चेतन है, यह अन्य है, तुझसे भिन्न है इसलिये इस देह से तुम्हारा कोई मेल नहीं है फिर भी देह और आत्मा को तू एक मान रहा है। तू अपनी हठ नहीं छोड़ता इसलिये तू मूर्ख बना हुआ है ।।१।।

तू मोहवश चारों गतियों में भ्रमण करता हुआ, इंद्रिय विषयों के भोगरूपी महाविष का पान कर रहा है फिर भी तू उसको नहीं छोडता है। हे भाग्यहीन! उसमें तू प्रसन्न मत हो अपनी भूल सुधार और अपने स्वभाव रूप दर्शन, ज्ञान व चारित्ररूपी अमृत का पान कर।।२।।

माता–पिता,पुत्र–भाई और तेरे कुटुम्बीजन सब ही स्वार्थ के सम्बन्धी हैं, तू इनके लिये घर को सुन्दर और व्यवस्थित बनाने में लगे रहने से अपने ज्ञान आदि गुणों का का नाश मत कर।।३।।

यह तन, यह धन और इनका भोग – ये सब संयोग स्वप्न के समान हैं और इनके विलय होने में देर नहीं लगती। हे भाई! इनसे ममत्व मत कर। तू स्वानुभव और ज्ञान द्वारा अपना भ्रम छोड दे।।४।।

महाभाग्य से तुझे यह दुर्लभ मनुष्यभव, सुक्षेत्र, उत्तम कुल तुझे मिला है और साथ ही श्री जिनेन्द्र का उपदेश सुनने का अवसर भी मिला है। अतः अब कविवर पण्डित श्री दौलतरामजी कहते हैं कि मन से ममत्व छोड़कर इस दुविधा से शीघ्र ही छुटकारा पाओ।।५।।